पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जलाशयों की विरासत

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग, संरक्षण एवं विनाश के सन्दर्भ में हमें तीन प्रमुख वैश्विक प्रवृत्तियां नजर आती हैं। पहली, जो उपयोग से ज्यादा संरक्षण पर ध्यान देती है। दूसरी, जो प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग के साथ–साथ उनकी समाप्ति से पहले सचेत होकर संरक्षण के लिए जुट जाती है। तीसरी, जो उपयोग विनाशक स्तर तक करती है लेकिन संरक्षण बिल्कुल नहीं करती। शायद आज के परिवेश में ज्यादातर लोग तीसरी प्रवृत्ति के पोषक नजर आते हैं, इसिलिए जनोपयोगी प्राकृतिक संसाधनों का धीरे–धीरे विलोप हो रहा है।

यह बात जगजाहिर है कि भारत में प्राचीन तालाबों, जोहड़ों व कुण्डो की मौजूदा हालात बहुत ही दयनीय है, जो उचित संरक्षण के अभाव में और भी बिगड़ते जा रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रों के तालाबों व कुण्डों की जानकारी समेटने की महत्वपूर्ण कोशिश कई अलग–अलग लोगों ने की है। लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जलाशयों की ऐतिहासिक विरासत को दस्तावेजों में समेटने की संगठित कोशिश मेरठ स्थित ''जनहित फाउंडेशन'' द्वारा की गई है। इस शोध कार्य को अंजाम देने वाले श्री हरिशंकर शर्मा के अनुसार उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती यह आई कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जलाशयों पर छोटी–बड़ी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। उनका यह भी कहना है कि यहां तक गजेटियर्स में तालाब का वर्णन भी नहीं है। उनका यह दावा अतिश्योक्तिपूर्ण लगता है क्योंकि नयी दिली स्थित सेन्टर फॉर साइंस एंड इनवायर्मेंट ने सन 1997 में प्रकाशित ''डाइंग विजडम'' में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ प्रमुख तालाबों के बारे में वर्णन किया है और उसमें गजेटियर्स के सन्दर्भ का भी उल्लेख है। इसके बावजूद यह दस्तावेज इस क्षेत्र में तालाब व अन्य जल स्रोतों की जानकारी के वर्णन के लिए अच्छा माध्यम है और इन्हें समेटने का कार्य करने के लिए हरिशंकर शर्मा बधाई के पात्र हैं। ''पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जलाशयः ऐतिहासिक विरासत'' में उन्होने तालाबों व कुण्डों की प्रमुख जानकारी जुटाने के साथ–साथ उनके ऐतिहासिक सारोकारों को प्राचीन धर्मग्रंथों से खोजने की जहमत भी उठाई है।

मेरठ जिले का ''सूरज कुण्ड'' अत्यधिक महत्वपूर्ण तालाब था, जो पूर्ण रूप से सूख चुका है। एक मील क्षेत्र में फैले इस तालाब का अस्तित्व गंगनहर बनने के बाद तक तो कायम था। लेकिन सम्पर्क रजवाहे का आबू नाला बनने के बाद शहर का गंदा पानी आने से इस तालाब की मौत हो गई। सन 1780 में बना ''श्री राम ताल'' 40 वर्ष पूर्व तक गंग नहर से भरे जाने तक तो जीवित था, लेकिन बाद में जब इसे नलकूपों से भरा जाने लगा तो यह तालाब सूख गया। मध्य काल में मेरठ से गढ़मुक्तेश्वर मार्ग पर किठौर कस्बे के चारो ओर ''किठौर के तालाब'' काफी प्रसिद्ध थे। अब सिर्फ उत्तर व दक्षिण के तालाब ही शेष बचे हैं और दक्षिण का तालाब 125 एकड़ से सिकुड़ कर सिर्फ 40 एकड़ ही रह गया है। मोदीनगर के समीप ढिडाला गांव में करीब 40 बीघे में फैले ''प्राकृतिक झील'' के आस–पास जाड़े के मौसम में प्रवासी पक्षी भोजन के तालाश में आज भी यहां आते हैं। इस तरह मेरठ जिले में ही पिलोखड़ी का तालाब, लुप्त नवचण्डी ताल, लुप्त सरोवर, श्रीराम ताल, पक्का तालाब, दुर्वासा ताल, गांधारी तालाब, कौशिकी तालाब, जरत्कारू ऋषि का तालाब, जाटो वाला तालाब, बूढ़ी गंगा झील, शहजहांपुर का तालाब, नंगली ताल, गंगाल तालाब, सेठों का तालाब, करनावाल का तालाब आदि अपनी स्वर्णिम इतिहास समेटे हुए दुदर्शा की गाथाएं कह रही हैं।

मुजफ्फरनगर जिले में अति प्रचीन ''मोती झील'' का पानी किसी समय मोती के समान स्वच्छ हुआ करता था। यह जलाशय मौजूदा काली नदी के अस्तित्व में आने से पहले से मौजूद थी, जो आज काफी उथली होकर सिकुड़ चुकी है। शामली तहसील में महाभारत कालीन प्राचीन तालाब ''हनुमान टीला'' को स्थानीय युवकों ने करीब ढाई साल मेहनत के बाद जीर्णोद्धार करके भव्य बना दिया। कैराना कस्बे में स्थित ''नवाबों का तालाब'' का जीर्णोद्धार शाहजाहां के पैतृक हकीम मुकर्रब खान ने कराया था। इस कस्बे में महाभारत काल में कर्ण द्वारा निर्मित 360 विशाल कुओं का जिक्र आता है, जिसमें से 2–4 के ही अवशेष प्राप्त होते हैं। जानसठ तहसील के बिहारी गांव में स्थित ''कांच का तालाब'' के बारे में कहा जाता है कि महाभारत काल में मीलों तक फैले पाण्डवों के विहार स्थल के मध्य में स्थित एक भव्य व विशाल तालाब के समीप ही कौरव–पाण्डव का निर्णायक द्यूत क्रीड़ा सम्पन्न हुआ था। आज वह लगभग 1000 मीटर के एक घास–फूंस–जंगली वनस्पति से अटा हुआ पानी से युक्त गड्ढा मात्र रह गया है। तालाब में पहले स्वर्ण निर्मित सीढ़ी होने के कारण इसे कंचन ताल कहा जाता था, जो बाद में अपभ्रंश होकर ''कांच का तालाब'' कहलाने लगा। बुढ़ाना से तीन किमी दूर स्थित महाभारत काल से भी प्राचीन ''बनी का तालाब'' करीब 6 एकड़ में फैला है। महाभारत काल में द्वैपायन नाम से प्रसिद्ध इस तालाब के बारे में कहा जाता है कि मृत्यु से पूर्व दुर्योधन इसमें छिपे थे।

जानसठ तहसील में ही 18वी शताब्दी में मराठों द्वारा मन्दिर, तालाब व कुएं बनवाए गये थे, जिसमें से एक ''चार दीवाली वाला कुआं'' का पानी आज भी अपने औषधीय गुणों के कारण जाना जाता है। आजादी के बाद भी इस विशाल कुंए से आस–पास के कई गांववासी पेयजल लेते थे एवं इससे थोड़ी–बहुत सिंचाई भी होती थी। इसी तहसील में मुंझेड़ा गढ़ी गांव में अष्टभुजी 16 मीटर गोलाई का ''बाय वाला कुआं'' (बावड़ी) में आज भी भरपूर पानी रहता है। इस क्षेत्र में आज भी उस काल के 53 छोटे–बड़े कुएं व बावड़ी मौजूद हैं। मवाना–बिजनौर मार्ग पर बहसूमा कस्बे में 18वी शताब्दी में तत्कालीन शासक जैत सिंह ने महाभारत कालीन चिन्हों का देखकर एक विशाल तालाब बनवाया था, जो ''जैत सिंह का तालाब'' नाम से जाना जाता है। उस समय यह तालाब स्थानीय आवश्यकताओं के साथ–साथ बाहरी आक्रमणकारियों से रक्षा भी करता था। गौरवपूर्ण अतीत वाला यह तालाब सन 1995 तक अतिक्रमण विहीन एवं

स्वच्छ पानी से लबालब था, जो अब अतिक्रमण से आधा रह गया है। जिले में मीरापुर से दक्षिण–पश्चिम में मौजूद 100 बीघे में फैला ''कच्चा–पक्का तालाब'' कुछ जाट युवकों के प्रयत्न से अतिक्रमण से बचा हुआ है। हालांकि शोधकर्ता ने जिले के प्रमुख ''कांधला के तालाब'' के बारे में संक्षिप्त परिचय मात्र दिया है, जिसका बेहतर वर्णन ''डाइंग विजडम'' में मिलता है। महाभारत काल से बसे हुए नगर कांधला के चारो तरफ करीब 12 बड़े तालाब हुआ करते थे। मुगल काल में इन बड़े एवं कई छोटे–छोटे तालाबों को नहरों के माध्यम से आपस में जोड़कर प्रभावी जल निकासी के साथ–साथ सिंचाई के उपयोग में लाया जाता था। इन तालाबों के आपसी सम्पर्क को सड़क आदि विभिन्न आधुनिक निर्माणों के माध्यम से बाधित किये जाने से अब ये तालाब समाप्त होते जा रहे हैं। इनके अलावा जिले में कई ऐतिहासिक तालाब जिनका थोड़ा–बहुत अस्तित्व बरकरार है उनमें कुटी तालाब, देवी मन्दिर वाला तालाब, ज्ञानेश्वर ताल, हास कुण्ड, टन्ढेड़ा के तालाब, मीरापुर के तालाब, भंराई वाला तालाब, सतियों वाला तालाब, एवं शेखपुरा का तालाब प्रमुख हैं।

गाजियाबाद जिले में, ऐतिहासिक दूधेश्वर महादेव मन्दिर व सरोवर, नृग का कुआं सहित नौ सरोवर एवं कुओं का वर्णन किया गया है। इनमें से हसनपुर की ''प्राकृतिक झील'' आज भी बहुत विशाल भूभाग में फैली हुई है। जिले के मसूरी औद्योगिक क्षेत्र में दादरी मार्ग पर 35 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले इस झील के एक तिहाई हिस्से में पानी है एवं शेष नमभूमि है। यह विदेशी पक्षियों का प्रवास स्थल माना जाता है। जिले में लालकुआं से डेढ़ किमी की दूरी पर स्थित ''कुत्ते के तालाब'' के बारे में कहावत है कि इसमें नहाने मात्र से कुत्ते के काटे का असर समाप्त हो जाता है। मोदीनगर से लगभग 6 किमी दूर मछरी गांव के पास 20 एकड़ में फैला ''सिद्ध बाबा कौड़िया तालाब'' के बारे कहावत है कि इसमें नहाने से चर्म रोग दूर हो जाता है। करीब 500 वर्ष पूर्व एक प्राकृतिक तालाब में इस गुण को महसूस करके एक बनजारे ने इसे विशाल तालाब का स्वरूप दिया।

बागपत जिले में राम ताल, सेठो का तालाब एवं हिण्डन झील के बारे में वर्णन किया गया है। जिले में मात्र तीन तालाबों के बारे में जिक्र और वो भी जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हैं। किसी समय हिण्डन नदी मौजूदा ''हिण्डन झील'' से होकर बहती थी और आगे घूमकर वर्तमान नदी की धारा के स्थान पर आ जाती थी। बाद में नदी के किनारों को बांध देने के पश्चात नदी का यह पुराना स्थल झील में बदल गया, जो अब सूख कर समाप्त होने के कागार पर है।

मध्य काल में उपरोक्त तालाबों में ज्यादातर सिंचाई के लिए इस्तेमाल किये जाते रहे हैं, लेकिन आज इनमें से मात्र कुछ ही सिंचाई के लिए इस्तेमाल होते हैं। भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय के पास सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं के नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों पर यदि नजर डाले तो सन 2000–01 में इन चार जिलों में मात्र पांच तालाबों में ही सिंचाई क्षमता तैयार की गई हैं। उनमें से सिर्फ गाजियाबाद जिले में 3 तालाब सिंचाई के लिए इस्तेमाल हुए, जबकि बागपत जिले के दो तालाब सिंचाई के लिए इस्तेमाल ही नहीं हुए। इस तरह सन 2000–01 में तालाबों से सकल रूप से 291 हेक्टेयर सिंचाई क्षमता (पूर्ण क्षमता) का इस्तेमाल हुआ।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चार जिलों में मात्र 62 तालाबों एवं कुण्डों के बारे में संक्षिप्त जानकारी निश्चित तौर पर आंखे खोलने वाली है, जिससे पता लगाता है कि उनमें से ज्यादातर आज या तो लुप्तप्राय स्थिति में हैं या फिर जलहविहीन। इन तालाबों व कुण्डों के लुप्त होने का एक प्रमुख कारण यह है कि आधुनिक विकास के चाहत में एक तरफ तो इनके जलग्रहण क्षेत्रों को अवरूद्ध किया जा रहा है, दूसरी तरफ प्राकृतिक जल स्रोतों के जल निकास मार्ग को बाधित किया जा रहा है। विकास के दौर में इनकी प्रासंगिकता बरकरार रखना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि ये स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति के साथ–साथ प्रकृति चक्र में एक कड़ी के तौर पर कार्य करते हैं। शोधकर्ता द्वारा जुटाये गये कई महत्वपूर्ण जानकारियों के श्रोत का उल्लेख नहीं होने से यह दस्तावेज कुछ अधूरा सा लगाता है। इन संसाधनों की जमीनी सच को उजागर करने के बाद लेखक इनके भावी उपायों के बारे में जिक्र करते तो यह दस्तावेज और बेहतर बन सकता था। इन तालाबों व कुण्डों के बारे में वर्तमान सच जानने के बाद भी क्या इनके संरक्षण के बजाय इन्हें इनके हाल पर छोड़ना उचित होगा। इनके संरक्षण के लिए यदि अब भी चेतना नहीं आती है तो शायद आगामी पीढ़ी इनके अस्तित्व के बारे में सिर्फ ऐसी ही कुछ दस्तावेजों के माध्यम से जान सकेंगी।

बिपिन चन्द्र चतुर्वेदी
बांधो, नदियों एवं लोगों का दक्षिण एशिया नेटवर्क (सैण्ड्रप) 18.12.2007
Email: bipincc@gmail.com
www.sandrp.in